|  |  |  |  |  |  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
| |  | | --- | |  | |  |  | |  | | --- | |  | |  |  |  |
|  |  |  |  | |  | | --- | | Register Number:  **Date: 22-04-2019** | |  |  |
| **ST. JOSEPH’S COLLEGE (AUTONOMOUS), BANGALORE-27** | | | | | | |
| **B.A.** **B.SC. SANSKRIT - II SEMESTER** | | | | | | |
| **SEMESTER EXAMINATION: APRIL 2019** | | | | | | |
| **SAN - 215 - Sanskrit** | | | | | | |
|  | **SUPPLEMENTARY CANDIDATES ONLY**  **ATTACH THE QUESTION PAPER WITH THE ANSWER BOOKLET** | | | | |  |
| **Time- 2 1/2 hrs** | |  | **Max Marks-70** | | |  |
|  |  |  |  |  |  |  |
| I. दशानाम् एकवाक्येन संस्कृतभाषायाम् उत्तरं लिखत। 10×1=10  अ) सूर्यवंशस्य नृपः कः?  आ) इन्द्रः कस्य अनुग्रहेण दृष्टः?  इ) अजः कुत्रः देहत्यागं कृतवान्?  ई) दशरथः दूरात् कं शब्दं श्रुतवान्?  उ) कामधेनुः कस्य छायायां आसीत्?  ऊ) वरतन्तुमुनेः शिष्यः कः?  ऋ) दिलीपः कं वरं पृष्टवान्?  ॠ) विदर्भदेशस्य नृपः कः?  लृ) आचार्यवसिष्टस्य धनं किम्?  ए) रघुः कम् यागं कृतवान्?  ऐ) देवेन्द्रः कस्य साहाय्यं प्रार्थितवान्?  ओ) रामलक्षणौ किमर्थं विश्वामित्रेण सह आश्रमं गतवन्तौ?  II. आग्लभाषायाम् अर्थं लिखत। 5×1=5  2. केदारः  क. आवर्तः  ख. उपसेचनम्  ग. ननान्दा  घ. सान्द्रमुद्रिका  ङ. यन्त्रांशः  III. सन्धिं विभज्य संयोज्य नाम लिखत 5×1=5  3. नेच्छति  च. माता + इव  छ. एकस्यैव  ज. प्रति + अवदत्  झ. विवेकानन्दो+अयम्  ञ. तस्यास्तु  IV. श्लोकस्य अन्वयम् अन्वयार्थं तात्पर्यं च लिखत। 2×5=10  4. साधूनां दर्शनं पुण्यं तीर्थभूता हि साधवः।  तीर्थं फलति कालेन सद्यः साधुसमागमः॥  5. श्लोकार्धेन प्रवक्ष्यामि यदुक्तं ग्रन्थकोटिभिः।  परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्॥  6. वनेऽपि सिंहा मृगमांसभक्षिणो  बुभुक्षिता नैव तृणं चरन्ति।  एवं कुलीना व्यसनाभिभूताः  न नीचकर्माणि समाचरन्ति॥  V. वाक्यद्वयेन लिखत 5×2=10  7. आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः  8. इन्द्रम् उद्दिश्य रघुराजस्य वचनं किम्?  9. स्वभावं न जहात्येव साधुरापद्गतोऽपि सन्।  10. इन्दुमती कथं मृता?  11. अतिथिः कथं राज्यं पालितवान्?  12. बहुविघ्नास्तु सदा कल्याणसिद्धयः।  VI. सविस्तारेण लिखत 1×10=10  13. दशरथस्य शापविषये लिखत  14. कुशकुमुद्वत्याः विवाहविषये लिखत  VII. अधोलिखितम् अनुच्छेदं पठित्वा उत्तराणि लिखत । 10 | | | | | | |
|  |  |  |  |  |  |  |

पुरा वाराणस्यां कर्पूरपाटकः नाम रजकः आसीत्। तस्य गृहे एकः गर्दभः एकः कुक्कुरः च अवसताम्। गर्दभः भारं वहति स्म। कुक्कुरः चोरेभ्यः गृहरक्षां करोति स्म। एकदा रात्रौ एकः चोरः द्रव्याणि हर्तुं तस्य गृहं प्रविष्टः। गर्दभः श्वानम् अकथयत्- “सखे ! भवतः तावदयं व्यापारः तत्किमिति त्वमुच्च्यैः शब्दं कृत्वा स्वामिनं न जागरयसि?” कुक्कुरोऽवदत् – “भद्र! मम नियोगस्य चर्चा त्वया न कर्तव्या। किम् न जानासि यत् अहम् अहर्निशं तस्य गृहरक्षां करोमि। अयं च चिरान्निवृत्तः ममोपयोगं न जानाति। इदं श्रृत्त्वा गर्दभः अकथयत् – “त्वं विपत्तौ स्वामिकार्यस्य उपेक्षां करोषि। भवतु, तावत् यथा स्वामी जागरिष्यति तन्मया कर्तव्यम्” इत्युक्त्वा सः उच्चैः चीत्कारशब्दं कृतवान्। ततः सः रजकः निद्राभङ्ग कोपात् उत्थाय लघुदण्डेन गर्दभं ताडयामास।

पूर्णवाक्येन लिखत 2×2 = 4

ट. रजकस्य गृहे कौ अवसताम्

ठ. रात्रौ गर्दभः श्वानम् किम् अकथयत्?

प्रदत्तविकल्पेभ्यः उचितम् उत्तरं चित्त्वा लिखत 1×4=4

ड. वसति स्म इति क्रियापदस्य कर्तुपदं किम्?

१) कुक्कुरः २) गर्दभः

३) रजकः ४) चोरः

ढ. अधुना इति पदस्य विलोमपदं गद्यांशे किं प्रयुक्तम्

१) उच्चैः २) यथा

३) पुरा ४) तावत्

ण. रात्रिन्दिवम् इत्यर्थे अत्र किं पदम् प्रयुक्तम्?

१) रात्रौ २) निद्राभङ्ग कोपात्

३) अहर्निशम् ४) उपेक्षाम्

त. “त्वम् विपत्तौ स्वामिकार्यस्य उपेक्षां करोषि” इत्यत्र **त्वम्** सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

१) गर्दभाय २) रजकाय

३) चोराय ४) कुक्कुराय

त. व्याकरणांशः 2

15. गद्यांशात् प्रत्ययान् चित्वा लिखत

16. गद्यांशात् अव्ययानि चित्वा लिखत

VIII. संस्कृते अनुवादं कुरुत 10

A STUPID JACKAL

Once a jackal wanders in search of food. In one place it sees a grape vine. It is full of grapes. The fruits are ripe. The jackal thinks ‘grapes are my food today’. It jumps up to obtain the grapes. But it does not get them. It jumps up again and again. Even then the fruits are not reachable. The jackal becomes angry. It blames the fruits. ‘The grapes are sour’ says the jackal. Afterwards, it returns to its place.

OR

**ದಡ್ಡನರಿ**

ಒಂದು ನರಿಯು ಇದೆ. ಅದು ಒಮ್ಮೆ ಆಹಾರಕ್ಕಾಗಿ ಅರಣ್ಯದಲ್ಲಿ ಅಲೆಯುತ್ತದೆ. ಒಂದು ಕಡೆ ದ್ರಾಕ್ಷಿಯ ಬಳ್ಳಿಯನ್ನು ನೋಡುತ್ತದೆ. ಬಳ್ಳಿಯಲ್ಲಿ ತುಂಬಾ ದ್ರಾಕ್ಷಿಹಣ್ಣುಗಳಿವೆ. ಅವು ಹಣ್ಣಾಗಿವೆ.  
ನರಿಯು – ‘ಈ ದಿನ ನನಗೆ ದ್ರಾಕ್ಷಿಹಣ್ಣುಗಳ ಊಟ’ ಎಂದು ಆಲೋಚಿಸುತ್ತದೆ. ದ್ರಾಕ್ಷಿಯನ್ನು ಪಡೆಯಲು ಮೇಲಕ್ಕೆ ನೆಗೆಯುತ್ತದೆ. ಆದರೆ ದ್ರಾಕ್ಷಿಹಣ್ಣುಗಳನ್ನು ಪಡೆಯಲಾಗಲಿಲ್ಲ. ನರಿಯು ಮತ್ತೆ ಮತ್ತೆ ನೆಗೆಯುತ್ತದೆ. ಆದರೂ ಹಣ್ಣುಗಳನ್ನು ಪಡೆಯಲಾಗಲಿಲ್ಲ.

ನರಿಯು ಸಿಟ್ಟುಗೊಳ್ಳುತ್ತದೆ. ಅದು ದ್ರಾಕ್ಷಿ ಹಣ್ಣುಗಳನ್ನೇ ದೂಷಿಸುತ್ತದೆ. ‘ದ್ರಾಕ್ಷಿಹಣ್ಣುಗಳು ಹುಳಿಯಾಗಿವೆ’ ಎಂದು ಹೇಳುತ್ತದೆ. ಬಳಿಕ ತನ್ನ ಜಾಗಕ್ಕೆ ಹಿಂದಿರುಗುತ್ತದೆ.